अधुनातन हिंदी उपन्यास साहित्य

संपादिका
डॉ. अरूणा हिरेमठ

अधुनातन हिंदी उपन्यास साहित्य

(Adhunatan Hindi Upnyas Sahitya)

संपादिका	:- डॉ. अरुणा हिरेमठ
सहाय्यक संपादक	:- डॉ. दत्ता साकोळे
	:- डॉ. हाशम बेग मिर्झा
ISBN	:- 978-93-83742-08-0
प्रकाशन तिथि	:- १८/०३/२०१७
मुद्रक	:- भरत ग्राफिक्स कळंब
अक्षर जुळवणी	:- शिंपले मारुती, स्नेहा बनसोडे
मुखपृष्ठ	:- गणेश सातपुते
प्रकाशक	:- हमदर्द पब्लिक लायब्ररी, फलकनुमा किला, बीड - ४३११२२, महाराष्ट्र (भारत)

किमत :- २०० रु.

प्रकाशित रचनओं के विचार से सम्पादक मंड़ल का सहमत होना आवश्यक नहीं।

अनुक्रमणिका

अक्र.	विषय	नाम	पृ.सं.
:-	प्रधानाचार्य की कलम से	डॉ. एस्.एम्. खेणेद्	
:-	संपादकीय	डॉ. अरुणा हिरेमठ	I
:-	संदेश	डा. विष्णूलाल कुमाल	IX
:-	उद्घाटन पर भाषण	डॉ. रामप्रसाद भट्ट	XI
:-	बीज भाषण	डॉ. परिमळा अंबेकर	XXXVIII
:-	विशेष व्याख्यान	पालदेवाड गणेश	१
१.	आदिवासियों की सांस्कृतिक विरासत लोकगीत	सुमाकान्ति एम.	७
२.	अधुनातन काल के हिन्दी उपन्यासों में आदिवासी	उषा यादव	१२
३.	अधुनातन काल के हिन्दी उपन्यासों में नारी चेतना	डॉ. अमित शुक्ल	२०
४.	अधुनातन हिन्दी उपन्यासों में नारी चेतना	डॉ. विश्वनाथ भालेराव	२५
५.	हिंदी साहित्य में दलित चेतना	डॉ. गणपत माने	२८
६.	अधुनातन काल के हिन्दी उपन्यासों में दलित चेतना	नागनाथ भेंडे	३३
७.	दलितों के मसिहा डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर:एक चिंतन	डॉ. संतोष येरावार	३६
८.	आदिवासी जीवन उपन्यासों में स्त्रीयों की करुण गाथा	आदिनारायण बदावत	४१
९.	आधुनिकता हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श	ई. सुनीता	४३
१०.	आधुनिकता स्त्रीवादी विमर्श की विधागत स्थिति	डी. जनार्धन	४५
११.	अधुनिकत परंपरागत मूल्यों से दलित स्त्री मुक्ती की छटपटाहट	ताल्ल निरंजन	४७
१२.	अधुनातन बोल्ड लेखिका : कृष्णा सोबती	परिमल श्रीनिवास	४९
१३.	आधुनिकता हिन्दी साहित्य में नारी विमर्श	डॉ. शिवहर बिरादर	५२
१४.	चित्रा मुद्गल जी के उपन्यासों में मध्यवर्ग की नारी	डॉ. के. श्याम सुन्दर	५४
१५.	नासिरा शर्मा के उपन्यासों में नारी विमर्श	टी. सुमती	५७
१६.	अधुनातन मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में चित्रित नारी	टी. सुनिता	५९
१७.	अधुनातन भारतीय साहित्य में स्त्री - विमर्श	डॉ.एच. रमा देवी	६२
१८.	अधुनातन काल के हिन्दी उपन्यासों में नारी चेतना	डॉ. के.बी. गंगणे	६७
१९.	अधुनातन हिन्दी उपन्यासों में नारी विमर्श का स्वरूप	कविता बी.पी.	७०
२०.	अधुनातन हिन्दी उपन्यासों में दलित चेतना	शेख परवीन बेगम	७६
२१.	नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में अल्पसंख्याकों के जीवन	डॉ. बाबा शेख	८१
२२.	सूरज किरण की छाँव उपन्यास में आदिवासी चेतना	बेंद्रे बसवेश्वर	८५
२३.	आदिवासी शोषण एवं संघर्ष की गाथा : धार	डॉ. संजय जाधव	८९
२४.	स्त्री विमर्श का वस्तुनिष्ठ दस्तावेज मैत्रेयी पुष्पा का चाक	डॉ. वि. गोविन्द	१००
२५.	अधुनातन हिन्दी उपन्यासों में नारी जीवन की समस्याएँ	राधिका	१०३
२६.	अधुनातन हिन्दी उपन्यासों में स्त्री अस्मिता		

'आदिवासी जीवन केन्द्रित उपन्यासों में स्त्रीयों की करूण गाथा'

– डॉ. संतोष विजय येरावार
हिंदी विभाग प्रमुख
(देगलूर महाविद्यालय, देगलूर)

आदिवासी समाज सदियों से अभावग्रस्त जीवन जीने को मजबुर है। विकास की मुख्यधारा से कटिहुई जमाप्त आदिवासियों की है। उनका संपुर्ण जीवन त्रासदी, दुख, तिरस्कार, अपमान, घृणा और शोषण से भरा होता हैं। आर्थिक, समाजिक, शैक्षणिक एवं राजनीतिक आदि सभी क्षेत्रों से अनादीवर्षो से दुर्लक्षित रहे है। आदिवासी भौतिक सुखसाधनों कि उपलब्धता तो बहुत दूर की कौडी हैं। दो वक्त की रोटी, सर पर छप्पर पहननेके लिए अच्छे कपडे तक आदिवासीयों के पास नहिं होते है। शिक्षा एवं आरोग्य सुविधा से दूर्लक्षित होने के कारन, इनका जीवन अत्यंत हिन एवं दिन होता है। उदरनिर्वाह के संसाधन अत्यंत अल्प होने के कारन संपुर्ण जीवन अभाव में बिताना पडता है। अनेको विकृतियॉ, विसंगतियॉ एवं विडंबनाए जीवन के हर रास्ते पर कॉटो की तरह बिखरे होते हैं। अधिकतर अदिवासी जन जातियॉ घुमक्कडी के कारन अस्थिर होती हैं। उनका भविष्य तों गहरा अधकारमय होता है।आदिवासी स्त्रीयों का जीवन तों अनेको समस्याओं का पुलिंदा है। आदिवासी और स्त्री होने की दोहरी विचित्र एवं विकृत मानसिकता से आहत होती है। स्त्रीयों का जीवन तो अत्यंत विक्षिप्त और शोषित होता हैं। सरकार, प्रशासन, पुँजीपती, जमीनदार, तथाकथित उच्च वर्ग के लोग और आदिवासी पुरूष सभी उनका शोषन करते हैं। उन्हे अपनी वासना का शिकार बनाने के लिए सदैव मौके की ताक में रहते हैं

> आदिवासि स्त्रीयों का उपभोग करना वे अपना अधिकार समजते हैं। सामाजिक व्यवस्था

के ठेकेदार उनकी मजबुरियों का फायदा उठाकर उनका शरीर एवं जमीनों को भोगना चाहते हैं। आदिवासी स्त्रीयॉ अनपढ होने के कारन, अंधश्रद्धा, शोषित परंपरा, कुठित रीति रिवाजों को मानना अपना परम कर्तव्य मानती हैं। परिनाम स्वरूप वह दुख की अधिकारीनी हो जाती हैं। स्त्रीयोंको उनका अभावग्रस्त, अपमानित, घृणित, एवं तिरस्कृत जीवन अपने कर्मो के परिनाम स्वरूप हि प्राप्त हुआ हैं ऐसी उनकी धारना होती हैं। आदिवासी जनजातियों की अनेको परंपरा यह स्त्री शोषण को बढावा देनेवाली होती है। अनेको जनजातियों में एक स्त्री कों अनेको पुरूषों के साथ संबंध रखने की परंपरा होने के कारन स्त्री जीवन अंधकार मय, अस्थिर एवं घृणित होता हैं। अपने और अपने परिवार के पेट की आग मिंटाने के लिए वह अपने शरीर तक का सौदा कर देती हैं। इससे विचित्र बात और क्या हो सकती हैं। आदिवासी स्त्री जीवन की समस्यावों को वाणी प्रदान करने का कार्य आदिवासी जीवन केंद्रित हिन्दी उपन्यास कारों ने प्रभावी रूप से किया है। आदिवासी जनजातियों का सर्वांगिन चित्रण हिन्दी उपन्यासों में किया गया हैं। आदिवासी समाज कि सामाजिक आर्थिक, राजनैतिक, पारिवारिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक एवं धार्मिक परिस्थिती और उन परिस्थितीयों में व्याप्तविकृतियों एवं विडंबनाओं को प्रखरता से उघाडा हैं। आदिवासी स्त्री जीवन की सर्वांगिन वास्तविकताओं को अभिव्यक्त करने का कार्य हिन्दी उपन्यास कारों ने बडी ईमानदारीसे किया हैं।

आदिवासी जीवन केंद्रित हिन्दी उपन्यासों में स्त्री जीवन की त्रासदि, पुंजीपती एवं तथाकथित उच्च वर्ग द्वारा होने वाला मानसिक, शारिरिक व आर्थिक शोषन, राजनीति का शिकार होता आदिवासी समाज, प्रशासन द्वारा शोषित, अपमानित आदिवासी समाज । उनकी अंधश्रद्धा, रहन–सहन, वेषभुषा, खान–पान, भाषा शैली, लोकगीत, लोककथाएँ, लोकमुहॉवरे, सभ्यता एवं संस्कृती आदि सभी का सर्वांगिन चित्रण किया हैं। आदिवासी स्त्री किसप्रकार अभाव संत्रास, एवं पीडा में जीवनयापन करती हैं। पुरूषप्रधान वासनांध मानसिकता स्त्री किस प्रकार शिकार होती हैं इसका वास्तविक चित्रण उपन्यासकार ने किया हैं। अन्न, वस्त्र, निवारा जैसे मुलभूत अवश्यकताओं के पुर्तता में भी अदिवासी समाज सक्षम नहीं हैं उनके बेबस और अभावग्रस्त जीवन को उपन्यासों में उघाडा गया है।

सुरज किरण की छॉव गोंड आदिवासी जीवन केंद्रीत उपन्यास हैं जिसमें बंजारी के जीवन त्रासदी एवं व्यथा को उजागर किया गया हैं। विलीयम–भोली भाली बंजारी को अपने प्रेमजाल में फॉसता हैं उसे अपनी वासना का शिकार बनाता हैं और उसे पडयंत्र से जाति से बहिष्कृत कर देता है। बंजारीको बादमें जोसेफ प्रताडित और अपमानित करता हैं। और एक दिन होटल में बंजारी को कपुर को बेचकर चला जाता है। बेची हुई बंजारी पालित पशु की तरह जहॉ अपना मालिक बेचता हैं वहॉ रहती हैं।'जंगल के फुल' उपन्यास में अंग्रेज अधिकारी आदिवासी युवती महुआ को उपनी वासना का शिकार बनाना चाहता हैं। गोंड जाती का आदिवासी सरदार जिस लडकी की चाहे अपने साथ सुला सकता है उसका कोई विरोध नही कर सकता।

संजीव के 'धार' उपन्यास में बॉसगडा आदिवासी स्त्री मैना की त्रासदी को उजागर किया है। मैना के साथ जल मे पशु जैसा व्यवहार किया जाता हैं। जेलर मैना पर बलात्कार करता है परिनाम स्वरूप उसे बच्चा पैदा होता है। जिस कारण मैना को समाज और अपनी जाति की प्रताडना का शिकार होना पडता हैं। पति, पिता, बिरादारी, गुंडे, पूँजीपती, आदि मैना का प्रताडित एवं अपमानित करते हैं। वीरेंन्द्र जैन के पार अपन्यास में राऊत आदिवासी स्त्रीयों को उच्च वर्ग के प्रपंच, छल एवं कपट का शिकार बनना पडता है। जमीदार, अफसर एवं अन्य प्रस्थापित वर्ग आदिवासी स्त्रीयों को जबरन खरिदते है और बेचते हैं। "औरत एक ऐसी हाड मांस की वस्तुहैं। जिसे पलंग पर सुलाया भी जा सकता हैं। और जरूरत पडने पर जूती बनाकर पहना भी जा सकता हैं। समाज की तलहट जातियों के स्त्री–वर्ग की हालत तो और भी दर्दनाक हैं। एक अघोषित ग्राम वधू की पदवी निचली व मझीली जातियों की औरतों को दे दी जाती हैं। उनका अनाध उपभोग करना स्वर्ण अपना जन्मसिद्ध अधिकार मानता है।"

मैत्रेय पुष्पा का अल्मा कबुतरी उपन्यास कबुतरा जाति की स्त्रीयों की पीडा एवं वेदना को उघाडता हैं। मशामाते धोखे से जंगलिया की हत्या कर कदमबाई को अपनी वासना का शिकार बनाता है। दुर्जन कुछ रूपए के लिए अल्मा को नारियों के व्यापारी सूरजभान को बेच देता है। अल्मा को संतोले भी मंत्री को खुश करने के लिए भेज देता हैं। अल्मा के मजबुरी के कारन वह अपना शरीर मंत्री को समर्पित कर देती है। इस तरह से आदिवासी स्त्रीयों की त्रासद, संत्रास, पीडा, संघर्ष ओर अवमानना को अपन्यासों में उघाडा गया हैं।"[1]

कब तक पुकारूँ यह रांगेय राघव का करनट आदिवासी जीवन पर आधिरित उपन्यास है। उपन्यास का कथानक राजस्थान और ब्रज के सीमाचंल पर आधारित है। समाज के मुख्य प्रवाह से कटी हुई करनट जाति विषम परिस्थिती में गुजर–बसर करती है। संघर्ष, अपमान, घृणा, तिरस्कार, मजबुरी, अभावपुर्ण जीवन वासनांध मानसिकता का पशुतुल्य प्रहार, जबरन एवं मजबुरन वैश्याव्यवसाय, बलात्कार आदि करनट आदिवासी स्त्रीयों के जीवन के पहलूओं को उपन्यास में उजागर किया है। करनट आदिवासी उपजिवीका के लिए खेल, तमाशे, नाचने – गाणे एवं शिकार पर निर्भर रहते है। डॉ रांगेय राघव ने उपन्यास के प्रारंभ में ही नट जाति की विशेषता के संबंध में लिखा है। ''नट कई तरह के होते है। इनमें करनट जरायम पेशा कहे जाते हैं। इनकी कोई नैतिकता नही होती। इनमें मर्द औरत को वेश्या बनाकर उसके द्वारा धन कमाते हैं। ज्यादातर ये लोग चोरी करते है और ढोल मढनां, हिरन की खाल बेचना इनका काम है। इनकी औरतें डोमनियों की तरह नाचती है। उंची जाती के लोग अक्सर डोमनियों से नाजायज ताल्लुक रखते है पर डोमनियॉ यह अपने पति को नहीं मालूम होने देती करनटों मे छूट है। वहॉ कोई बुराई 'सेक्स' के आधार पर नही मानी जाती।''[2]

डॉ रागेय राघव नें प्यारी, धूपो चमारिन, कजरी, सूसन, चंदा, सोनो आदि स्त्री पात्रों के माध्यम से करनट आदिवासी स्त्री जीवन की मजबुरी, त्रासदी, संत्रास, पीडा, अभावग्रस्त और संघर्षमय जीवन को उजागर किया है। तिरस्कार, आर्थिक निर्बलता एवं परिवार सुरक्षा हेतु शरीर का समर्पण, जबरन एवं मजबुरण शरीर का व्यवसाय, रखेल बनने की असाहयता, वैश्या व्यवसाय से जुडे होने के कारन समाज की घृणित दृष्टि, उच्च वर्ग की कामेष्ठा दृष्टि, पुरूषों की वासनांधता के कारन बलात्कार का शिकार होना यह करनट आदिवासी स्त्रियों कें जीवन के दुखद अंग बन गए है। इन सभी पात्रो के माध्यम से रांगेय राघव ने आदिवासी स्त्रियों की दुर्दशा को उघाडा है।

दरोगा साहन प्यारी को जबरन हथिया लेता है, सुखराम बेचारा असहाय होकर प्यारी को छोडने को मजबुर हो जाता है। अंत में प्यारी रूस्मतखॉ की हवेली में रखेल बनकर रहने लगती है। रूस्मतखॉ की चापलूसी करने वाला बॉके विधवा धूपो चमारिन को अपनी वासना का शिकार बनाना चाहता है तो सुखराम इसका विरोध करता हैं। इस कारन बॉके सुखराम को अपने साथियों के द्वारा पिटाई करता है। और धूपों आत्महत्या कर लेती है। अंग्रेज अफसर की लडकी सूसन की डाकूओं से रक्षा करते है। और सूसन उन्हे अपने घर नौकरी दे देती है। इसी बीच एक अंग्रज युवक सूसन की लडकी चन्दा को ठाकुर बेरहमी से मारते–पीटते हैं। यह सारी घटनाऍ स्त्री के त्रासदी को उजागर करती हैं। प्यारी, चंदा, कजरी, सुसन और धूपो आदि स्त्री पात्रें के जीवन का करूण अंत स्त्री जीवन के त्रासदी का परिचायक हैं। करनट आदिवासी स्त्रियॉ मुक्त यौन संबंधो को मानती है। अनेको पुरूषों के साथ शारिरिक संबंध प्रस्थापित करने में कोई परहेज नही होता। कुछ के आदिवासी समाजों में नवयुवतियों को अपनी ही आदिवासी जाति में स्वच्छन्दता पूर्वक यौन संबंध प्रस्थापित करने की आजादी होती हैं। आदिवासी स्त्रियॉ मानती है की उनका काम हि है पुरूषों की शरीर की भुख मिटाना प्यारी एक जगह कहती हैं ''पुरूषों की शरीर की भुख मिटाना औरत का काम हि हैं। शरीर सुख में नैतिकता का कोई प्रश्न नही होता वह तो आवश्यकता होती है स्त्री और पुरूष की और औरत का काम काम होता है। अगर हमारा शरीर पुरूष को शारिरिक सुख

नहीं दे सकता तो यह शरीर किस काम का है। डॉ. रागेय राघव भूमिका में कहते है, वैसे तो नट समाज में केवल शारीरिक स्तर पर ही औरत का अस्तित्व माना जाता है, वह स्वच्छन्द यौनाचार को औरत का कार्य मानता हैं। ..... करनट आदिवासी नारियों में यौन संबंध सहज और स्वाभाविक समझा गया हैं।"[3]

सौनो प्यारी से कहती है – जानती है, सिपाई क्यों आया था? जानती हूँ। प्यारी ने कहा – दरोगा मुझे दिन में घूर रहा था। मरे की तबीयत आ गयी है। परंन्तु सुखराम तो न मानगा। नही मानेगा? अरी ये तो औरत के काम है। उसे बताने की जरूरत ही क्या है?"

'सो तो है, बह बूरा समझेगा न?'

'औरत का काम है। उसमें बुरा–भला क्या? कौन नहीं करती? नही तो मार–मार कर खाल उधेड देगा दरोगा और तेरे बाप और खसम दोनों को जेल भेज देगा। फिर भी पेट भरने को यही करना होगा?"[4] आदिवासी स्त्रियों को प्रशासकीय अधिकारी किस प्रकार अपने वासना का शिकार बनाते है इसका वास्तविक चित्रण उपन्यास में किया है। पेट भरने के लिए और अपने परिवार की रक्षा करने के लिए स्त्रियों को अपना देह पुरूषों को समर्पित करना पडता हैं।

समाज का तथा–कथित उच्च वर्ग इनकी तरफ वासना और घृणा की दृष्टि से देखता हैं। करनट आदिवासी जाति को निम्न माना जाता है, "करनट या नट जैसी जाति जो भारतीय जाति है और जहॉ नटनियों को मात्र मनोरंजन का ही नही रास्ते चलने वाले हर किसी उच्चवर्णीय युवक की कामेच्छा की बली बनना पडता है। इसका विरोध कोई नट भी नही कर सकता।"[5]

कमलाकर गंगावने लिखते है, करनटों मे नारी पति के होते हुए भी अनेक पर–पुरूषों से संबंध रखती है। नये संबंध स्थापित करने तथा पुराने तोंडने में वह स्वतंत्र रहती है। उनके ये संबंध शारिरिक भूख की तृप्ति हेतु एवं प्रजनन प्रकिया हेतु नही होते, अपितु पेट की आग बुझााने के लिए होते है। पेट भरने के लिए इस समाज की नारी किसी को भी चवन्नी– अठन्नी पर शरीर का कय–विकय करती है। वास्तव में पेट की आग या समृध्द वर्ग का उत्पाडन इनकी अनैतिकता का कारण हो सकता है। ऐसा होते हुए भी इस समाज की नारी की मान्यता यह है कि नाता जोडना और बात है, मन की होकर रहना और बात है। करनट जमात को अपना पेट भरने के लिए अपने शरीर को भी दॉव पर लगाना पडता है। तथा समाज द्वारा उन्हे तिरस्कृत भी किया जाता है।

स्त्रीयों को अपने परिवार का पालन–पोषन करने के लिए देह को कौडीमोल बेचना पडता है। उच्च जातियों के लोगो की रखेल बनना पडता है। नारी जन्म पर दोषारोपन करते हुए प्यारी कहती है। "ये दुनिया नरक है। हम गन्दे कीडे हैं। तूने यह संसार ऐसा क्यों बनाया है जहॉ आदमी कटता है तो इसके लिए दर्द तक नही होता। यहॉ पाप इतना बढ गया है कि गरिब और कमीना आदमी कोढी बनकर अपने पेट के लिए अपनी अच्छे देह को गंदा बना है। नट की छोरी पर जवानी आती है और गन्दे आदमी उसे बेइज्जत करते है फिर

भी वह रंडी की तरह जिए जाती है। मर क्यों नही जाती। हम सब मर क्यों नही जाते।"[6]
स्त्री जीवन की उदासीनता को प्यारी उजागर करती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1.हिन्दी में आदिवासी जीवन केंद्रित उपन्यास, प्रा. बी. के. कलासवा, पृ–206

2.कब तक पुकारूँ (भूमिका) डॉ.रागेय राघव

3.कब तक पुकारूँ (भूमिका) डॉ.रागेय राघव

4.कब तक पुकारूँ (भूमिका) डॉ.रागेय राघव पृ. 45

5.समकालीन हिन्दी कथा साहित्य में जनचेतना, अरूना लोखंडे, पृ.104

6.हिन्दी में आदिवासी जीवन केंद्रित उपन्यास, प्रा.बी.के.कलासवा, पृ. 103